बड़े बाबा का शाश्वत प्रसाद

भगवान नित्यानन्द की सौर पुण्यतिथि के सम्मान में आयोजित सत्संग से एक वार्ता

श्री मुक्तानन्द आश्रम

गुरुवार, ८ अगस्त, २०२४

मार्क मैक्लॉग्लिन

सुप्रभात!

भगवान नित्यानन्द की सौर पुण्यतिथि के सम्मान में आयोजित इस सिद्धयोग सत्संग में आप सभी का स्वागत है।

मेरा नाम मार्क मैक्लॉग्लिन है। मैं अपनी पत्नी आशा व हमारे दो बेटों, आनन्द और शम्भु के साथ वर्जीनिया में रहता हूँ और वहीं पर मैं साउथ एशियन रिलीजन्स् के विषय का प्रोफ़ेसर हूँ।

यहाँ श्री मुक्तानन्द आश्रम में विज़िटिंग सेवाकर्ता के रूप में सेवा करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है! आज के इस सत्संग में आपके सूत्रधार के रूप में सेवा करने में भी मुझे उतनी ही प्रसन्नता हो रही है।

बुधवार, ३१ जुलाई को भगवान नित्यानन्द की चान्द्र पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में, भगवान नित्यानन्द मन्दिर में श्रीगुरुमाई के साथ एक सत्संग का अयोजन हुआ था। शिवालिनी किंस्ले उस सत्संग की सूत्रधार थीं और उन्होंने बड़े बाबा की पुण्यतिथि के महत्त्व पर एक वार्ता दी। शिवालिनी जी की वार्ता में एक वाक्य था जिसे गुरुमाई जी ने उनसे सभी प्रतिभागियों के लिए दोहराने को कहा। आज मैं आपके साथ उसी वाक्य पर आगे खोज करना चाहता हूँ।

वह वाक्य है :

> चान्द्रतिथि के अनुसार, आज उस दिन की तिरसठवीं वर्षगाँठ है जब भगवान नित्यानन्द ने अपनी भौतिक देह का त्याग किया था और अपनी दिव्य पुण्यराशि को अपने सभी भक्तों को प्रदान किया जो उन्हें पूजते हैं, जो उनकी भक्ति करते हैं, उनसे प्रेम करते हैं।

फिर गुरुमाई जी ने सभी उपस्थित लोगों से पूछा कि इस वाक्य से उन्हें क्या समझ में आता है। हममें से अनेक लोगों ने अपनी-अपनी समझ बताई। तत्पश्चात् गुरुमाई जी ने उजागर कुश्निक जी से और मुझसे कहा कि सभी ने जो बताया उसे हम दोहराएँ।

मैंने लोगों की जिस समझ को दोहराया वह उस प्रक्रिया पर केन्द्रित थी जिसके द्वारा एक महात्मा अपने देहत्याग के समय अपना पुण्य अपने भक्तों को प्रदान करते हैं, और उजागर जी ने जिस समझ को दोहराया वह इस बात पर केन्द्रित थी कि उस पुण्य को ग्रहण करने के लिए एक भक्त कौन-से कर्म करता है।

आज के इस सत्संग में, हम बड़े बाबा द्वारा दिव्य पुण्य प्रदान करने की इस असाधारण व रहस्यमयी घटना की गहराई में उतरेंगे। और हम अन्वेषण करेंगे कि हम, जो कि श्रीगुरु के शिष्य हैं, इस असीम उपहार को ग्रहण करने के लिए किस प्रकार ग्रहणशील बन सकते हैं।

जैसा कि शिवालिनी जी ने समझाया कि भगवान नित्यानन्द जैसे सिद्धपुरुष का पुण्य, दिव्य होता है; यह दिव्य पुण्यराशि है।

पुण्य एक विशेष प्रकार का कर्म होता है। जैसा कि आपमें से अनेक लोग जानते ही होंगे, कर्म का अर्थ है, हमारे द्वारा किए गए कार्य और साथ ही उन कार्यों के परिणाम या फल भी जो कि कालान्तर में प्रकट होते हैं। अतः पुण्यकर्म का अर्थ है, वे कर्म या कार्य जो पुण्यफल, सद्भाग्य या आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

अब हम पल भर के लिए, भगवान नित्यानन्द के सम्बन्ध में इस विषय पर विचार करें—
भगवान नित्यानन्द जो जन्मसिद्ध थे, महासिद्ध थे। क्या आप कल्पना भी कर सकते हैं कि भगवान नित्यानन्द ने अपने जीवनकाल में निष्काम व करुणामय कर्मों द्वारा कैसी असीमित पुण्यराशि संचित की होगी?

अपने जीवन के अन्त में, जब एक मोक्षप्राप्त महात्मा अपने भौतिक स्वरूप का त्याग करते हैं तब उनके पुण्यकर्म से सम्बन्धित एक परम चमत्कारिक घटना घटित होती है। इसे समझने के लिए, पहले हमें प्राण के विषय में चर्चा करनी होगी। प्राण वह जीवनीशक्ति है जो स्थूल शरीर को चेतन बनाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक व्यक्ति के कर्म और उसके पुण्यकर्म भी, उसके प्राणों में संचित होते हैं।

एक सामान्य मनुष्य के जीवन के अन्त समय में, उसके प्राण एक नए जन्म की ओर प्रयाण करते हैं; उसका यह नया जन्म उसके प्राणों में संचित उसके कर्मों के अनुसार रूप ले लेता है।

तथापि, जब बड़े बाबा जैसी एक मुक्त आत्मा अपना शरीर छोड़ती है तो उनके प्राण एक नए जन्म की ओर प्रयाण नहीं करते—ऐसे महात्मा पुनः जन्म नहीं लेते। वरन्, ध्यानसाधना के बल से वे साक्षात्कारी महापुरुष अपने प्राणों को मध्यनाड़ी में खींच लेते हैं और उनके प्राण सहस्रार में ऊर्ध्वगति करते हैं जहाँ वे परम चिति में विलीन हो जाते हैं।

चूँकि अब वे परम मुक्त, अनाबद्ध, अनन्त और शाश्वत हैं, इसलिए प्राण की आवश्यकता नहीं रह जाती। यजुर्वेद के एक भाग, बृहदारण्यकोपनिषद् में एक सिद्धमहात्मा के महानिर्वाण का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

> वे जो निष्काम हैं. . . जिनकी कामनाओं की प्राप्ति हो चुकी है, आत्मा ही जिनकी कामना है, उनके प्राण उत्क्रमण नहीं करते [न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति]। ब्रह्म होने से वे ब्रह्म में लीन हो जाते हैं।[१]

तो एक सिद्धपुरुष के प्राणों में संचित पुण्य उनके सहस्रार में विद्यमान रहते हैं, जहाँ से वे महापुण्य उन महात्मा की पूजा करने वाले, उनकी भक्ति करने वाले, उनसे प्रेम करने वाले भक्तों के कल्याण हेतु सतत प्रसरित होते रहते हैं।

अपने दीर्घ जीवनकाल के दौरान बड़े बाबा ने जो असीम पुण्यराशि संचित की, वह हम सभी के लिए उनका शाश्वत प्रसाद है। हम इसी कल्याणकारी शक्ति की अनुभूति करते हैं जो गणेशपुरी स्थित उनके समाधि-मन्दिर से प्रसरित होती रहती है।

तथापि यह शक्ति उनके समाधि-मन्दिर के स्थान तक ही सीमित नहीं है। हम चाहे जहाँ भी हों, इस शक्ति की अनुभूति हम तत्काल कर सकते हैं क्योंकि यह असीम और शाश्वत है।

तो, हम किस प्रकार इस दिव्य पुण्य प्रसाद को ग्रहण करें और उसे साकार करें? शिवालिनी जी के वाक्य के दूसरे भाग में हमें इसका संकेत मिलता है।

> . . . [बड़े बाबा ने] अपनी दिव्य पुण्यराशि को अपने सभी भक्तों को प्रदान किया जो उन्हें पूजते हैं, जो उनकी भक्ति करते हैं, उनसे प्रेम करते हैं।

"जो उन्हें पूजते हैं, जो उनकी भक्ति करते हैं, उनसे प्रेम करते हैं।"

हम सबके लिए बड़े बाबा का दिव्य प्रसाद ग्रहण करने की कुंजी यही है। जैसा कि उजागर जी ने चान्द्र पुण्यतिथि सत्संग में कहा था, "पूजा-कर्म ही भक्त को ग्रहणशील बनाता है जिससे वह उन महात्मा की पुण्यराशि को प्राप्त कर पाता है।"

पूजा-कर्म हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व को इसके लिए तैयार करता है कि हम उस महापुण्य को अपने अन्दर ग्रहण कर सकें जिसकी वर्षा बड़े बाबा सतत हम पर कर रहे हैं। शास्त्रों और सन्त-कवियों की रचनाओं में हमें प्रचुर उपदेश मिलते हैं जिनमें यह उद्‌घोष किया गया है कि हमें प्रेम व भक्तिभाव से श्रीगुरु की पूजा करनी चाहिए।

तेरहवीं शताब्दी के महान सिद्ध, ज्ञानेश्वर महाराज अपनी रचनाओं व अपने काव्यों में यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार हमारे द्वारा किए गए पूजन-वन्दन से हमें यह महान पुण्य प्राप्त होता है।

मैं आपको ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा भगवद्‌गीता पर लिखी उनकी सुप्रसिद्ध टीका 'ज्ञानेश्वरी' में से ऐसे ही कुछ पदों के उत्कृष्ट उदाहरण बताता हूँ। ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं :

हे देव, हे श्रीगुरु आपकी जय हो!
आप वह कल्पतरु हैं जो कल्पनाशक्ति से परे है,
आप वह भूमि हैं जिसमें आत्मबोध का बीज विकसित होता है।
रविकिरणों के स्पर्श से क्या कमल खिलने में संकोच करता है?
जल का स्पर्श पाकर क्या लवण यानी नमक अपना स्वरूप खो नहीं देता?
उसी प्रकार, जब मैं आपका स्मरण करता हूँ,
तब मैं अपने आपको भूल जाता हूँ. . .।
. . . आपने मेरे अन्दर अपने आपको भर दिया है,
इसलिए मुझे खुद का बोध ही नहीं है
और मेरी वाणी आपका स्तुतिगान करना चाहती है।[२]

ज्ञानेश्वर महाराज हमें दिखा रहे हैं कि पूजन करने से हम अपने अन्दर खुलापन लाते हैं ताकि हम वह ग्रहण कर सकें जो श्रीगुरु हमें प्रदान कर रहे हैं—वह है, अपनी आत्मा की अनुभूति। जब हमारी पूजा फलती है, हमें अनुभव होता है कि श्रीगुरु हमारे अन्दर विद्यमान हैं। इस स्मरण से हम, अपने व श्रीगुरु के बीच प्रतीत होने वाले पृथकत्व को विलीन कर देते हैं। और इस ऐक्यभाव से एक ललक जाग उठती है कि हम और भी अधिक एकाग्रता से, और भी अधिक प्रेम-भक्ति से श्रीगुरु की पूजा करें।

और अब, हम ठीक यही करेंगे—हम 'नित्यानन्दं ब्रह्मानन्दं' नामसंकीर्तन द्वारा, भगवान नित्यानन्द के प्रति अपने प्रेम को, अपनी भक्ति को अभिव्यक्त करेंगे।

अपने आसन को नवीन करें. . .

सहजता से श्वास लें. . .

यह नामसंकीर्तन राग यमन कल्याण में संगीतबद्ध है जो भक्तिभाव, शान्ति व करुणा को जगाता है। और यह आशीर्वादों का आवाहन करता है।

हम बड़े बाबा के नामों का जो संकीर्तन करेंगे उनमें से कुछ नामों का अर्थ सुनें :

नित्यानन्दं—"वे जो शाश्वतता का आनन्द हैं"

ब्रह्मानन्दं—"वे जो ब्रह्मानन्द हैं"

श्रीगुरुदेवं—"वे जो दिव्य श्रीगुरु हैं"

ॐ नमो नित्यानन्दम्—ॐ, मैं भगवान नित्यानन्द को नमन करता हूँ।

आइए, हम अपने परमप्रिय बड़े बाबा का स्तुतिगान करते हुए नामसंकीर्तन करें।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] बृहदारण्यकोपनिषद् ४.४.६। अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२४। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[२] ज्ञानेश्वरी १८.१०, १६-१८। अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२४। सर्वाधिकार सुरक्षित।